**International Journal of Commerce and Management Research**
**ISSN: 2455-1627**
**www.managejournal.com**
**Volume 1; Issue 2; December 2015; Page No. 64-65**

# आधुनिक युग में स्त्री शिक्षा का प्रबंधन एवं महत्व

**Dr. Pragya Aggarwal**
Associate Professor, Hindu College of Education, Sonipat, Haryana, India.

## प्रस्तावना

रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्त्री को ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना मानते थे। उनके अनुसार "स्त्री और पुरुष का पद समान है, पर दोनों के रूप में भिन्नता है। इन दोनों का जोड़ा सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि वे एक दूसरे के आभाव की पूर्ति करते हैं। इसलिए एक दूसरे के बिना रहने की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः यह सोचना आवश्यक है कि यदि एक के पद को आघात लगता है, तो दूसरे की हानि और बर्बादी होती है। उन्होंने बताया कि मुख्य रूप से स्त्री को पत्नी, माता और समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बहुत जोर दिया था।

अपने शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा भाषणों में उन्होंने स्त्री को बहुत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि बच्चों का पालन एवं उनकी आदतों को परिष्कृत कर योग्य नागरिक बनाने में स्त्रियों का विशेष योगदान होता है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियाँ, पुरुषों का हाथ बटांती हैं। प्राचीन भारत का उदहारण देते हुए रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि वैदिक कार्य में अनेक विदुषी स्त्रियां थीं, जिन्होंने वेद, मन्त्रों की रचना की उस समय का भारतीय समाज शिक्षा नीति, राजनीति, धर्म एवं अर्थ की दृष्टि से वर्तमान समाज से कहीं अधिक उन्नत था।

उन्होंने स्त्रियों को गृह कार्य की शिक्षा देने पर विषेश बल दिया और कहा कि उनके रूचि और रुझान को अवश्य ध्यान में रखा जाये। उन्होंने बेसिक शिक्षा का सामान्य पाठ्यक्रम संचालित कारने का प्रस्ताव पेश किया, जिसके अनुसार पांचवी कक्षा तक छात्र-छात्राओं का विषय समान है, केवल चौथी कक्षा में छात्राओं के लिए गृह विज्ञान का विषय शामिल कर दिया। छठीं और सातवीं कक्षा में बेसिक काम पर छात्राओं को गृह विज्ञान विषय लेने की छूट थी। वर्द्धा शिक्षा योजना में माता-पिता को यह अधिकार दिया गया कि यदि वे सह शिक्षा के पक्ष में नहीं हैं, तो बारहवीं कक्षा में भी बालिकाओं को सह शिक्षा देने के पक्ष में रहे। रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार इस शिक्षा के प्रति बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। यदि हम एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, परन्तु एक स्त्री को शिक्षित करने का मतलब है एक परिवार को शिक्षित करना।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार वेदों में भी इसी शिक्षा का समर्थन किया गया है- "इंद्रम् मंत्रम् पत्नी पठेत" अर्थात यह मंत्र पत्नी पढ़े। वेद के इस मंत्र से प्रकट है कि पत्नियां शिक्षित होंगी तो यज्ञ में सम्मिलित हो सकेंगी। अतः स्त्री को पुरुष के समान शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। इसी शिक्षा पर अधिकाधिक बल देते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बाह्य प्रवृत्ति में पुरुष प्रमुख होता है। इसलिए वाह्य प्रवृत्ति का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है। आन्तरिक प्रवृत्ति में स्त्री प्रमुख होती है। इसलिए गृह व्यवस्था और बाल-बच्चे की शिक्षा-दीक्षा आदि विषयों का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा मुझे जब-जब अवसर मिलता है, तब-तब मैं पुकार-पुकार कर कहता हूँ कि जब तक भारत में स्त्री शिक्षा का प्रसार न होगा। स्त्रियां तनिक भी दबी रहेंगी अथवा उन्हें पुरुषों की अपेक्षा काम अधिकार प्राप्त होंगे। तब तक भारत का सच्चा उद्धार न होगा, इसलिए स्त्री शिक्षा पर ध्यान दो।

स्त्री शक्ति की सजीव प्रतिमा है । मनु ने कहा है कि जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहां देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ उनका आदर नहीं होता, वहां सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। स्त्रियों की अनेक समस्याओं का समाधान शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। स्त्रियों की शिक्षा का केंद्र कर्म हो। धार्मिक शिक्षा-चरित्र संगठन और ब्रह्मचर्य पालन-इन्हीं पर अधिक ध्यान देना चाहिए। भारतीय स्त्री का आदर्श सीता का चरित्र होना चाहिए। उन्हें त्याग की शिक्षा दी जाये।

स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए एकमात्र उपाय शिक्षा है। शिक्षा से ही उनमे आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और वे स्वयं अपनी सहायता कर सकेंगी। स्त्रियों की शिक्षा में धार्मिक शिक्षा आवश्यक है, क्योंकि विवेकानन्द भारतीय नारी को सीता और गार्गी के आदर्श के अनुरूप बनाना चाहते हैं, पाश्चात्य नारी की प्रतिलिपि इसी से उनमें साहस जाग्रत होगा। उन्होंने स्त्रियों के सामने सीता का आदर्श उपस्थित किया। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि आधुनिक शिक्षा-प्रणाली से हमारे युवक-युवतियां पाश्चात्य आदर्शों का अनुसरण कर रहे हैं । इससे युवकों से भी अधिक युवतियों की हानि हुई है। इससे सब ओर नैतिक पतन बढ़ा है। उन्होंने स्त्रियों में त्याग और सेवा की आदर्श उत्पन्न करने की सलाह दी। पुरुषों के समान स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य के आदर्श का पालन करना चाहिए। स्त्रियों को शिक्षा देने के लिए स्त्री शिक्षकों में उच्च चरित्र की आवश्यकता है। स्त्री शिक्षा स्त्रियों के द्वारा ही दी जनि चाहिए। ये विवाहित अथवा अविवाहित अथवा विधवा कोई भी हो सकती है, किन्तु सर्वत्र उच्च चरित्र अत्यन्त आवश्यक है। इसके आभाव में किसी भी स्त्री को शिक्षक होने का अधिकार नहीं है। केवल धर्नापार्जन के लिए शिक्षण कार्य ग्रहण करना उपयुक्त नहीं है।

स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए विवेकानन्द के इतिहास और पुराण, गृहविज्ञान और कला तथा धर्म की शिक्षा पर जोर दिया हैं गृहविज्ञान में सीना-पिरोना, भोजन पकाना तथा गृहस्थ जीवन के विभिन्न कार्य सम्मिलित है। इन सबके साथ-साथ पुरुषों के सामान स्त्रियों को भी शारीरिक शिक्षा दी जनि चाहिए, ताकि वे स्वयं अपनी रक्षा कर सकें और निर्भय होकर सब कहीं घूम-फिर सकें। युवकों के समान युवतियों में भी साहस और शौर्य उत्पन्न करने की आवश्यकता है। ऐसी मातायें ही साहसी बालकों को जन्म दे सकती हैं। उन्ही की गोद में पलकर देश का निर्माण करने वाले सपूत पैदा हो सकते हैं। वहां दूसरे माध्यम के द्वारा भी प्राकृतिकता विकसित की जाती है। जैसे विभिन्न उत्सवों पर सम्मिलित होना, अभिनय कार्यक्रम, चित्र बनाना, साहित्य का अधययन आदि। इन क्रियाओं के द्वारा जीवन को वास्तविक रूप से प्रदर्शित किया जाता है। विद्यार्थियों को प्रकृति को प्यार करने योग्य बनाकर प्रकृति से स्वतंत्रता प्राप्त करने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। यह न केवल मानव व वस्तुओं के ही अपितु प्रकृति के साथ भी इस सम्बन्ध में आत्मा की समझ को विकसित करने में सहायक होती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ऐसी शिक्षा में विश्वास करते थे कि जो मानवीय व्यक्तिगत का पूर्ण ध्यान रखती हो, ऐसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के स्वस्थ्य विकास के लिए आवश्यक होगा कि शारीरिक व मानसिक दोनों गुणों का विलास हो।

सत्य, प्राचीन अथवा आधुनिक किसी समाज का सम्मान नहीं करता। समाज को ही सत्य का सम्मान करना पड़ेगा, अन्यथा समाज ध्वंस हो जाये, कोई हानि नहीं। सत्य ही हमारे सारे प्राणियों और समाजों का मूल आधार है। अतः सत्य कभी भी समाज के अनुसार अपना गठन नहीं करेगा। वही समाज सब से श्रेष्ठ है, जहाँ सर्वोच्च सत्यों को कार्य में परिणत किया जा सकता है। यही मेरा मत है और यदि समाज इस समय उच्चतम सत्यों को स्थान देने में समर्थ नहीं है, तो उसे इस योग्य बनाओ और शीघ्र तुम ऐसा कर सको, उतना ही अच्छा।

आधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों को भी सीखना चहिये। संघमित्रा, लीलावती, अहिल्याबाई, मीराबाई, झाँसी की रानी के आदर्शों को अपनाकर स्त्रियोँ को पवित्रता, निर्भयता और ईश्वर परायणता के गुणों का अभ्यास करना चाहिए। समय आने पर उन्हें आदर्श माता बनाना चाहिए। शिक्षित और धार्मिक माताओं के ही घर महापुरुष जन्म लेते हैं। स्त्रियों की उन्नति से संस्कृति, ज्ञान, भक्ति का देश में जागरण हो जाये।

इस प्रकार से गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानन्द ने अपने-अपने ढंग से स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है। इन दोनों शिक्षाशस्त्रियों ने मातृ शक्ति के विकास को जनजीवन के विकास का आधार माना है, इन्होंने इस दिशा में विशेष प्रयत्न किया है कि देश के सभी स्त्रियां शिक्षित हो अपने जीवन के मूलभूत आवश्यकताओं को समझ सकें, अपनी आने वाली पीढ़ियों के प्रति अपने दायित्वों की पहचान कर सकें, तथा वे राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के पूर्ण विकास में अपनी भागीदारी दर्ज करा सकें ।

**सन्दर्भ**


1. रवीन्द्रनाथ टैगोर: स्वदेशी, समाज, विश्वभारत, 1962
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर: शिक्षा, सन्मार्ग प्रकाशन, 16 यू.वी. बैगलोरोड, दिल्ली-6, 1961
3. रवीन्द्रनाथ टैगोर: शिक्षा, संस्कृति और इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1967
4. सत्येन्द्र नाथ मजूमदार: विवेकानन्द चरित्र, चौखम्भा विद्या भवन बनारस 1982
5. स्वामी विवेकानन्द: स्वामी विवेकानन्द युवाओं के आदर्श, श्री रामकृष्ण विवेकानन्द, वेदान्त साहित्य प्रकाशन, नागपुर